रॉबर्ट वैनॉय, प्रमुख भविष्यवक्ता, व्याख्यान 20

यशायाह 55 - 56

यशायाह 55:1-56:2 मुक्ति का निःशुल्क प्रस्ताव

आइए यशायाह 55:1-56:2 से शुरू करें, जो दूसरा खंड है जिसे हम यहां देख रहे हैं। यह व्यक्तियों के लिए मोक्ष की निःशुल्क पेशकश का लाभ उठाने का निमंत्रण है। मुझे लगता है कि पिछले अध्याय की तरह, 54 की तरह, इसलिए यह अध्याय सीधे यशायाह 53 में नौकर के मुक्ति कार्य के विवरण पर आधारित है। तो फिर, आप नौकर के काम के परिणामों के बारे में बात कर रहे हैं, और पहले तीन में छंद में आपके पास लोगों को सेवक के काम के परिणामों का लाभ उठाने का निमंत्रण है।

यशायाह 55:1-3ए परमेश्वर का निमंत्रण—जो संतुष्ट नहीं कर सकता उसका पीछा मत करो श्लोक 1 से 3 में, वह निमंत्रण सामान्य शब्दों में दिया गया है। ध्यान दो, "हे सब प्यासे लोगों, जल के पास आओ। जिसके पास पैसे नहीं हैं, आओ खरीदो और खाओ। आओ बिना पैसे, बिना दाम दाखमधु और दूध मोल लें। जो रोटी नहीं, उसके लिए तुम पैसे क्यों खर्च करते हो? और तुम्हारा परिश्रम उस चीज़ के लिये है जो तृप्त नहीं करता? यत्नपूर्वक मेरी बात सुनो, और जो अच्छा है उसे खाओ, और अपने मन को चर्बी से प्रसन्न करो। अपना कान झुकाओ और मेरे पास आओ। सुनो और तुम्हारी आत्मा जीवित हो जायेगी।" मुझे लगता है कि ब्रेकिंग पॉइंट 55:3ए में उस पहले वाक्यांश के बाद है। लेकिन यहां आपके पास सामान्य शब्दों में भगवान का निमंत्रण है। मुझे नहीं लगता कि उन तीन श्लोकों को पढ़ने से निमंत्रण की सटीक प्रकृति के बारे में बहुत कुछ सीखना संभव है क्योंकि यह बहुत सामान्य शब्दों में है।

लेकिन छंदों का तनाव यह है कि जब लोग किसी चीज़ को सुरक्षित करने के लिए श्रम कर रहे हैं, तो यह वास्तव में उन्हें कभी संतुष्ट नहीं करेगा, फिर भी भगवान बिना किसी लागत के सच्ची संतुष्टि प्रदान कर रहे हैं। "जो रोटी नहीं है उसके लिए तुम पैसे क्यों खर्च करते हो?" लोग वह खोज रहे हैं जो संतुष्ट करता हो। वे इसके लिए लगन से काम कर रहे हैं, फिर भी भगवान बिना किसी

लागत के सच्ची संतुष्टि प्रदान कर रहे हैं। इसलिए लोगों से आग्रह किया जाता है कि वे उस चीज़ की व्यर्थ तलाश छोड़ दें जो उन्हें कभी सच्ची संतुष्टि या ख़ुशी नहीं देगी। अपने स्वयं के साधनों और युक्तियों से इसकी तलाश करने के बजाय, वह उन्हें उस मुफ़्त प्रस्ताव को स्वीकार करने का निर्देश देता है जो ईश्वर उनके सामने रख रहा है। इसलिए श्रोता को पानी के पास आकर दाखमधु और दूध खरीदने, जो अच्छा है उसे खाने, और मोटापे से अपने मन को प्रसन्न करने के लिए आमंत्रित किया गया। मुझे लगता है कि यह स्पष्ट है कि शब्द आलंकारिक हैं। यह भौतिक रोटी या पानी या शराब या दूध नहीं है, बल्कि कुछ ऐसा है जिसकी तुलना उनसे उचित रूप से की जा सकती है। मुझे लगता है कि वे इस बात के उदाहरण हैं कि जीवन का समर्थन करने के लिए क्या वांछनीय, आवश्यक और बुनियादी है, और फिर सुसमाचार निमंत्रण को उन शर्तों में रखा गया है।

यह कुछ-कुछ जॉन 4 में कुएं पर महिला के साथ यीशु की तरह है। "जो कोई उस जल में से पीएगा जो मैं उसे दूँगा, वह अनन्तकाल तक प्यासा न होगा।" तुम इस कुएँ का पानी पीने के लिये यहाँ आते हो, परन्तु तुम्हें फिर प्यास लगेगी। मैं तुम्हें ऐसा जल दूँगा जिससे तुम्हें कभी प्यास नहीं लगेगी। लेकिन आप देखिए, यह मुफ़्त है। "पानी के पास आओ, जिसके पास पैसा नहीं है, वह आओ। जो चीज़ रोटी नहीं, उसके लिए तुम पैसे क्यों ख़र्च करते हो? और तुम उस चीज़ के लिए परिश्रम करते हो जो संतुष्ट नहीं करती।" देखिये, जो कुछ भी और किसी भी माध्यम से सच्ची संतुष्टि देता है, उसे ढूँढ़ने के आपके प्रयासों से कोई लाभ नहीं होगा। ऐसे सभी प्रयास निरर्थक हैं और व्यर्थ में किये गये हैं।

यहाँ ख़ुशी का वर्णन अधिक सामान्य है। इसमें मोक्ष को भी शामिल किया जा सकता है, लेकिन मुझे नहीं लगता कि यह यहीं तक सीमित है। लोग धार्मिक और गैर-धार्मिक दोनों तरह से संतुष्टि और खुशी चाहते हैं। लेकिन भगवान यहाँ क्या कह रहे हैं: मैं तुम्हें वह मुफ़्त दूँगा जो पूर्ण और संपूर्ण संतुष्टि देता है।

यशायाह 55:3बी-5 वाचा - दाऊद की निश्चित दया - सुसमाचार का प्रसार अब, जब आप यशायाह 55:3बी से 5 तक पहुंचते हैं, तो आपके पास कुछ और बात होती है। फिर यह कहता है, "और मैं तुम्हारे साथ सदा की वाचा बान्धूंगा, अर्थात दाऊद की पक्की करूणा की भी। देख, मैं ने

उसे प्रजा पर गवाही देनेवाला, और प्रजा पर प्रधान और प्रधान होने के लिये ठहराया है। देख, तू एक ऐसी जाति को बुलाएगा जिसे तू नहीं जानता। और जो जातियां तुझे नहीं जानतीं वे तेरे परमेश्वर यहोवा और इस्राएल के पवित्र के कारण तेरे पास दौड़ेंगी। क्योंकि उस ने तेरी महिमा की है।" परमेश्वर एक वाचा, एक चिरस्थायी वाचा प्रदान करता है, जिसे "दाऊद की निश्चित दया" के रूप में वर्णित किया जा सकता है। वे कहते हैं, जो लोग इस निमंत्रण को प्राप्त करेंगे, मैं तुम्हारे साथ एक चिरस्थायी वाचा बाँधूँगा, और उस अनन्त वाचा को "दाऊद की निश्चित दया" के रूप में वर्णित किया जा सकता है।

अब तुम पूछते हो, "दाऊद पर कौन सी दया की गई? दाऊद की वह 'निश्चित दया' क्या थी जो यहाँ उन सभी को दी गई है जो परमेश्वर की वाचा के भागीदार बनते हैं, उन सभी पर जो इस निमंत्रण का उत्तर देते हैं?" मैं सोचता हूं कि परमेश्वर ने दाऊद के साथ जो वाचा बाँधी, उसकी उत्कृष्ट विशेषता उसके पुत्र के संबंध में किया गया वादा है। परमेश्वर ने दाऊद को उसके सिंहासन पर बैठने के लिए वंशजों की एक सतत पंक्ति, एक शाश्वत राजवंश का वादा किया। अंततः, निःसंदेह, वह मसीह के आगमन में पूरा हुआ।

अब पद 4 कहता है, "देख, मैं ने उसे प्रजा पर गवाही देनेवाला, और प्रजा पर प्रधान और प्रधान ठहरा दिया है।" और मुझे ऐसा लगता है कि वहां मौजूद "वह" डेविड नहीं है, यह वही है जो डेविड को दिए गए परमेश्वर के वादे का केंद्र था। "देखो, मैंने उसे दे दिया है। मैं तुम्हारे साथ एक सदाबहार वाचा बाँधूँगा, यहाँ तक कि दाऊद की निश्चित दया भी।" "दाऊद की निश्चित दया" अंततः दाऊद के वंश, मसीह के आगमन की ओर इशारा कर रही है। "और मैंने उसे, जो दाऊद को दी गई परमेश्वर की प्रतिज्ञा का केन्द्र था, लोगों के लिये गवाही देने के लिये, और देश देश के लोगों के लिये एक अगुवा और सेनापति होने के लिये सौंप दिया है।

फिर श्लोक 5: जैसा कि आप इन तीन श्लोकों से गुजरते हैं, आपके पास संदर्भ का एक दिलचस्प स्विच है, आप कह सकते हैं। पद पाँच सीधे मसीहा को संबोधित करता है। आप देखते हैं कि जब यह कहता है, "देखो, तू," तो यह सीधे मसीहा को संबोधित कर रहा है। "देख, तू एक ऐसी जाति को बुलाएगा जिसे तू नहीं जानता, और ऐसी जातियां जो तुझे नहीं जानतीं, तेरे परमेश्वर यहोवा और इस्राएल के पवित्र के कारण तेरे पास दौड़ेंगी; क्योंकि उस ने तेरी महिमा की है।" अब मैं यह

सोचने में प्रवृत्त हूं कि यह उस विजय की बात नहीं करता है जो ईसा मसीह ने सहस्राब्दी काल की शुरुआत में जीती थी, बल्कि यह सुसमाचार के प्रसार की बात करता है। उस पर विश्वास करने के लिए अन्यजातियों का आना--यही दृश्य है। "तू ऐसी जाति को बुलाना जिसे तू नहीं जानता, और ऐसी जातियां जो तुझे नहीं जानतीं, तेरे परमेश्वर यहोवा और इस्राएल के पवित्र के कारण तेरे पास दौड़ेंगी; क्योंकि उस ने तुझे महिमा दी है।" इसलिए मुझे ऐसा लगता है कि इस समय मसीह के बुलावे पर जोर दिया जा रहा है, उन लोगों के लिए जिनके साथ उनके सांसारिक मंत्रालय के दौरान उनका कोई सीधा संबंध नहीं था, लेकिन जिन्हें अब सुसमाचार संदेश के साथ प्रस्तुत किया जा रहा है। इसके अलावा, जिनके बारे में फ़िलिस्तीन के यहूदियों ने भी नहीं सुना था वे बाद में परमेश्वर के लोगों का एक प्रमुख हिस्सा बन गए।

यशायाह 55:6-7 सुसमाचार निमंत्रण और क्षमा की आवश्यकता श्लोक 6 और 7 में सुसमाचार निमंत्रण दोहराया गया है, लेकिन इस बार क्षमा की आवश्यकता पर जोर दिया गया है। अध्याय 55, छंद 6 और 7, कहते हैं, "जब तक प्रभु मिल सकता है तब तक उसकी खोज करो, जब तक वह निकट है तब तक उसे पुकारो; दुष्ट अपना मार्ग छोड़े, और अधर्मी अपने विचार त्यागे ; और वह प्रभु के पास लौट आए, और वह उस पर दया करेगा; और हमारे परमेश्वर की ओर, क्योंकि वह बहुतायत से क्षमा करेगा।" श्लोक एक और दो में, जहां आपको वह प्रारंभिक निमंत्रण है, श्रोताओं को अधर्मी या दुष्ट के रूप में संबोधित नहीं किया गया है। श्लोक एक और दो में संदर्भ केवल उन लोगों के लिए था जो किसी वास्तविक चीज़ के लिए भूखे हैं। श्लोक एक और दो में आपको निर्देशित किया गया है कि वह कहाँ पाया जा सकता है। लेकिन अब, छह और सात में, पश्चाताप और क्षमा की आवश्यकता पर बल दिया गया है। "दुष्ट अपनी चालचलन और कुटिल मनुष्य अपने विचार त्याग दे; और वह प्रभु के पास लौट आए, और वह दया करेगा; और हमारे परमेश्वर की ओर, क्योंकि वह बहुतायत से क्षमा करेगा।" पश्चाताप पर जोर, क्षमा की आवश्यकता और पाप की चेतना सुसमाचार संदेश के महत्वपूर्ण भाग हैं। मोक्ष की कोई भी पुकार उनके बिना पूरी नहीं होती, लेकिन हमेशा उसी बिंदु से शुरुआत करना आवश्यक नहीं है। इस अध्याय में यशायाह उस बिंदु से शुरू नहीं होता है। वह उन लोगों को संबोधित करते हैं जिन्हें आवश्यकता का एहसास होता है। वे किसी चीज़

की लालसा कर रहे हैं: तृप्ति, संतुष्टि, और वह उन्हें बताता है कि यहाँ यह उपलब्ध है। लेकिन जैसे-जैसे अध्याय आगे बढ़ता है, वह पश्चाताप और क्षमा की आवश्यकता के इस मुद्दे को संबोधित करता है।

मेरे पास ईजे यंग के तहत आपके उद्धरणों के पृष्ठ 35 से एक नोट है, जो श्लोक 6 को संदर्भित करता है। "खोज को बलिदान तक सीमित नहीं किया जाना चाहिए, न ही प्रार्थना तक, न ही दोनों के संयोजन तक, बल्कि मूल अर्थ है ' चलने के लिए।' खोजने की क्रिया संभवतः ईश्वर की ओर कदम बढ़ाना या बस उसके पास आना है। समानांतर 'खोजना' का अर्थ है 'उसे बुलाना।' दोनों अभिव्यक्तियाँ एक साथ विश्वास और आज्ञाकारिता के पश्चाताप को दर्शाती हैं। उनमें जीवन के पुराने तरीके, दुष्टों और अधर्मी लोगों के मार्ग को त्यागना और पूरी आत्मा को विनम्र पश्चाताप में सच्चे ईश्वर की ओर मोड़ना शामिल है। यह तब किया जाना चाहिए जब वह निकट हो" इत्यादि।

यशायाह 55:8-9 परमेश्वर के मार्ग हमारे मार्ग नहीं हैं आइए श्लोक 8 और 9 पर चलते हैं। यशायाह प्रभु की ओर से बोलते हुए कहता है, "'क्योंकि मेरे विचार तुम्हारे विचार नहीं हैं, न ही तुम्हारे मार्ग मेरे मार्ग हैं,' प्रभु कहते हैं। 'क्योंकि जैसे आकाश पृथ्वी से ऊंचा है, वैसे ही मेरे मार्ग तुम्हारे मार्गों से ऊंचे हैं, और मेरे विचार तुम्हारे विचारों से ऊंचे हैं।" अब, मुझे लगता है कि छंद आठ और नौ का विचार यशायाह के इस खंड में पूर्ववर्ती दोनों से संबंधित है। साथ ही आगे क्या है। यदि आप पूर्ववर्ती घटनाओं के संदर्भ में पीछे मुड़कर देखें , तो मनुष्य का सामान्य रवैया उन लोगों को माफ नहीं करना है जो उन्हें अपमानित करते हैं, जो उनके खिलाफ कुछ करते हैं। सामान्य रवैया समता प्राप्त करने का है, और निश्चित रूप से गिरा हुआ व्यक्ति कभी भी यह नहीं सोचेगा कि उसने अपने साथ अन्याय करने वाले को कानून द्वारा दंड भुगतना होगा। लेकिन ये आयतें कहती हैं कि ईश्वर बिल्कुल अलग है। "मेरे विचार आपके विचार नहीं हैं, न ही मेरे तरीके आपके तरीके हैं।" उस सेवक मार्ग का चरमोत्कर्ष वह है जहाँ सेवक उन लोगों के अधर्म को अपने ऊपर ले लेता है जिन्होंने परमेश्वर के विरुद्ध पाप किया था। तो ये छंद दिखाते हैं कि ईश्वर कितना अलग है, जिसने सेवक के रूप में हमारे पापों को अपने ऊपर ले लिया। "मेरे रास्ते तुम्हारे रास्ते नहीं हैं, मेरे विचार तुम्हारे विचार नहीं हैं।" लेकिन फिर संदर्भ में आगे देखते हुए, मुझे लगता है कि वे श्लोक 10 और 11 में जो कुछ है,

उसकी ओर इशारा करते हैं।

यशायाह 55:10-11 परमेश्वर का वचन उसकी इच्छा को पूरा करेगा श्लोक दस और ग्यारह में आप पढ़ते हैं, "जैसे बारिश होती है, और आकाश से हिम उधर नहीं लौटता, वरन पृथ्वी को सींचकर फूल उत्पन्न करता है, जिस से बोनेवाले को बीज और खानेवाले को रोटी मिलती है; मेरा वचन जो मेरे मुंह से निकलता है वैसा ही होगा; मेरे पास व्यर्थ न लौटना, परन्तु जो कुछ मैं चाहता हूं उसे वह पूरा करेगा, और जिस काम के लिये मैं ने उसे भेजा है उस में वह सफल हो जाएगा।

ईसा मसीह के प्रथम आगमन पर, यहूदियों को उम्मीद थी कि वह बलपूर्वक अपना राज्य स्थापित करेंगे। वे इस महान शासक, एक शक्तिशाली व्यक्ति की तलाश कर रहे थे, लेकिन इसके बजाय आपके पास पीड़ित सेवक था। वह जो आता है और मर जाता है, और फिर शिष्यों के एक छोटे समूह को क्या प्रचार करने के लिए भेजता है? उसके वचन का प्रचार करो. यह एक ऐसा तरीका है जिससे लगता है कि यह सफल नहीं होगा। यह निरर्थक लगता है, अशिक्षित लोगों का यह छोटा सा समूह इस शब्द का प्रचार कर रहा है। लेकिन ईश्वर ने अपनी इच्छा पूरी करने और सुसमाचार को पृथ्वी के छोर तक फैलाने के लिए यही तरीका चुना है। तो आप फिर से देखते हैं, "मेरे विचार आपके विचार नहीं हैं, न ही आपके तरीके मेरे तरीके हैं।" श्लोक आठ और नौ में जोर श्लोक दस और ग्यारह के पूर्ववर्ती और आगे दोनों के संदर्भ में पीछे की ओर इशारा करता है कि भगवान के उद्देश्यों में अब यह उसका शब्द है जो दुनिया में उसकी इच्छा को पूरा करने जा रहा है। और हम निश्चिंत हो सकते हैं कि जब वचन आगे बढ़ेगा, तो वह उसे पूरा करेगा जो वह चाहता है और जिस चीज़ के लिए वह उसे भेजता है उसमें समृद्धि होगी।

यशायाह 55:12-13 आलंकारिक: गाते समय पहाड़ टूट पड़ते हैं [प्रकृति या आस्तिक?]

अध्याय 55 , श्लोक 12 और 13, अध्याय के अंतिम दो श्लोक। यहाँ सिर्फ एक सुझाव है. पहले मैं उन्हें पढ़ता हूँ: “क्योंकि तुम आनन्द के साथ निकलोगे, और शान्ति के साथ आगे बढ़ाए जाओगे; पहाड़ और पहाड़ियाँ तुम्हारे आगे आगे बढ़कर जयजयकार करेंगे, और मैदान के सब वृक्ष ताली बजाएंगे। कांटे की सन्ती सनोवर उगेगा, और झाड़ की सन्ती मेंहदी उगेगी; और वह यहोवा के लिये नाम का, और सदा का चिन्ह ठहरेगा, जो कभी काटा न जाएगा।

मैं बस एक सुझाव देना चाहता हूं कि यह एक आलंकारिक कथन है, जो अपने लोगों के जीवन में ईश्वर की दया के परिणामों का एक सुंदर आलंकारिक कथन है। सारी प्रकृति उन लोगों के लिए नया महत्व ग्रहण कर लेती है जो ईश्वर की संतान हैं। पद बारह, "तुम आनन्द के साथ निकलोगे, शान्ति के साथ आगे बढ़ाए जाओगे; पहाड़ और टीले तुम्हारे आगे आगे बढ़कर जयजयकार करेंगे, मैदान के सब वृक्ष ताली बजाएंगे।" तो ये नए दृष्टिकोण हैं, आप कह सकते हैं, ये अपने ही लोगों के दिलों में परमेश्वर के कार्य का परिणाम हैं। मुझे लगता है कि किसी भी दृष्टिकोण से, श्लोक बारह आलंकारिक है। मुझे नहीं लगता कि कोई यह तर्क देगा कि मैदान के सभी पेड़ सचमुच ताली बजाएंगे। मुझे संदेह है कि ऐसे लोग भी होंगे, जो अपनी व्याख्या में शाब्दिक होने का दावा करते हैं, जो वहां आलंकारिकता से इनकार करेंगे।

लेकिन जब आप श्लोक तेरह को देखते हैं तो आप प्रश्न पूछ सकते हैं: क्या तेरह भी आलंकारिक है? "काँटे की सन्ती सनोवर उगेगा, और झाड़ की सन्ती मेंहदी का पेड़ उगेगा; और उस से यहोवा का नाम होगा।" मुझे लगता है कि यह संभव होगा कि आप कह सकें कि यह कविता उस समय से परे दिखती है जब सहस्राब्दी काल में या नए स्वर्ग और नई पृथ्वी पर पृथ्वी से अभिशाप हटा दिया जाता है। कांटेदार वृक्ष के स्थान पर आपके पास देवदार का वृक्ष है और आप इसे अक्षरशः लेते हैं। लेकिन संदर्भ में, इसे बारहवें पद में जो कुछ पहले आता है, उसके निकट संबंध में मसीह के अनुयायी के नए जीवन के आलंकारिक रूप में समझने का पक्ष लिया जाएगा। दूसरे शब्दों में, छुटकारा पा चुके लोगों के दिलों में अब कांटे और झाड़ियाँ नहीं उगतीं। वे देवदार के पेड़ों की छाया और मेंहदी के पेड़ की सुंदरता से भरे हुए स्थान हैं। चरित्र अलग है, और यही आप श्लोक तेरह के अंतिम भाग में देखते हैं, "यह प्रभु के लिए एक नाम के रूप में होगा, एक शाश्वत चिन्ह के लिए जो काटा नहीं जाएगा।" सुसमाचार ऐसे परिवर्तित जीवन उत्पन्न करता है जो देखने योग्य हैं। "यह यहोवा के लिये एक नाम, और सदा का चिन्ह ठहरेगा, जो कभी न मिटेगा।" मैं इसके बारे में हठधर्मिता नहीं करूंगा, लेकिन फिर से आपके पास एक उदाहरण है और आप विशेष रूप से यशायाह में यह समझने में कठिनाई देखते हैं कि क्या शाब्दिक रूप से समझा जाना चाहिए और क्या आलंकारिक रूप से समझा जाना चाहिए। और मैं आपको कोई ऐसा फार्मूला देने का कोई आसान तरीका नहीं जानता जिसे आप आसानी से लागू कर सकें और यह आपके लिए इस तरह की

चीजों को हल कर देगा। आपको निर्णय लेना होगा, और मुझे लगता है कि निर्णय में मतभेदों को अनुमति देनी होगी।

उनका सवाल यह है कि, श्लोक तेरह में, क्या आप बारह की तरह उन लोगों के जीवन के बारे में बात कर रहे हैं जो नौकर के काम के परिणामों के लाभों का आनंद लेते हैं, या आप स्वयं प्रकृति के बारे में बात कर रहे हैं? मुझे ऐसा लगता है कि यह एक या दूसरा है। अब, मुझे एहसास हुआ कि आप जानते हैं कि यह सच है कि एक समय आएगा जब प्रकृति से अभिशाप हटा दिया जाएगा, लेकिन क्या श्लोक तेरह इसी के बारे में बात कर रहा है, या क्या श्लोक तेरह केवल काँटे और थीस्ल की आकृति का उपयोग कर रहा है किसी व्यक्ति के जीवन में किसी चीज़ का प्रतिनिधित्व करें, मुझे लगता है कि यही सवाल है। जिस तरह से यह श्लोक बारह से संबंधित है, मैं इसे उन लोगों के चरित्र गुणों के बारे में बोलने के आलंकारिक रूप में लेने के लिए इच्छुक हूं जो भगवान के सेवक हैं, कुछ देखने योग्य हैं।

यशायाह 56:1-2 ईश्वर की कृपा का परिणाम अच्छे कार्यों में होता है। आप देखेंगे कि मैंने यशायाह 56:1 और 2 को अध्याय 55 के साथ शामिल किया है। मुझे लगता है कि यह 1 और 2 में 56 में प्रवाहित होता है: "यहोवा यों कहता है, न्याय बनाए रखो।" और धर्म करो: क्योंकि मेरा उद्धार निकट है, और मेरा धर्म प्रगट होने पर है। धन्य है वह मनुष्य जो ऐसा करता है, और वह मनुष्य का पुत्र जो इस पर स्थिर रहता है, और विश्रामदिन को अपवित्र करने से बचाता है, और अपने हाथ को हर प्रकार की बुराई करने से रोकता है।" मुझे लगता है कि अध्याय 56, श्लोक 1 और 2 में, आपको यह विचार है कि भगवान की कृपा के परिणामस्वरूप उनके लोगों के जीवन में अच्छे कार्य होते हैं। यह वही विचार है जिसके बारे में पॉल रोमियों 6 में बोलता है: "हम जो पाप के लिए मर चुके हैं, अब उस पाप में कैसे जीवित रहेंगे।" यह एक समान विचार है. यह इस विचार का खंडन है कि ईसाई बनने के बाद मनुष्य स्वेच्छा से पाप में चलना जारी रख सकता है। तो "यहोवा यों कहता है, न्याय का पालन करो, धर्म के काम करो...धन्य है वह मनुष्य जो ऐसा करता है, मनुष्य का पुत्र जो उस पर अधिकार रखता है, और विश्रामदिन को अपवित्र करने से रोकता है।" परमेश्वर उन लोगों को आशीर्वाद देगा जो सेवक के काम पर भरोसा रखते हैं और पवित्र जीवन के द्वारा इसे प्रदर्शित करते

हैं। इन छंदों को वहीं रखा गया है जहां वे हैं, मोक्ष की पेशकश की शुरुआत में नहीं। शुरुआत में हमारे पास है, "आओ, प्राप्त करो, स्वतंत्र रूप से स्वीकार करो, बिना पैसे के, बिना कीमत के।" यह कर्मों पर निर्भर नहीं है, धार्मिकता के कार्यों पर निर्भर नहीं है जो हमने किए हैं। लेकिन यहाँ इस प्रस्ताव के अंत में यह एक संकेत के रूप में आता है कि मुक्ति प्राप्त व्यक्ति को किस प्रकार का जीवन जीना है।

उस पद में अंतिम वाक्यांश है, "वह जो सब्त के दिन को अपवित्र करने से रोकता है, और अपने हाथ को कोई भी बुराई करने से रोकता है।" युवा टिप्पणी करते हैं कि केल्विन शायद यह मानने में सही हैं कि सब्बाथ का उपयोग यहां सिनेकडोचे के रूप में किया जाता है - पूरे के लिए भाग - और भगवान द्वारा निर्धारित सभी के पालन के लिए खड़ा है। तो ऐसा नहीं है कि उसे केवल यही करना है, बल्कि इसे एक उदाहरण के रूप में, या संपूर्ण प्रतिनिधित्व के रूप में सामने लाया गया है: भगवान ने जो कुछ भी निर्धारित किया है उसका पालन करना। यह हमें उस दूसरे खंड के अंत तक लाता है।

यशायाह 56:3-8 सुसमाचार निमंत्रण सीमित नहीं है अंतिम खंड 56:3-8 है: सुसमाचार निमंत्रण किसी जाति या राष्ट्र तक सीमित नहीं है बल्कि सभी के लिए खुला है। यह तीसरा खंड है. याद रखें, ये अनुभाग नौकर के काम के परिणामों का वर्णन करते हैं। मुझे लगता है कि यह सारी सामग्री नौकर के काम से संबंधित है, यशायाह 53। अध्याय 54 भविष्य के विस्तार और आशीर्वाद का आश्वासन देता है। अध्याय 55 सुसमाचार का आह्वान है, यह व्यक्तियों को मोक्ष की मुफ्त पेशकश का लाभ उठाने के लिए निमंत्रण है। अब हम एक छोटे खंड पर आते हैं जो सुसमाचार निमंत्रण की सार्वभौमिकता पर जोर देता है।

पद 3 कहता है, "परदेशी का कोई पुत्र जो यहोवा से मिल गया हो, यह न कहे, कि यहोवा ने मुझे अपनी प्रजा से बिलकुल अलग कर दिया है।" न खोजे को यह कहने दे, कि देख, मैं सूखा पेड़ हूं। क्योंकि यहोवा यों कहता है, जो खोजे मेरे विश्रामदिन मानते, और जो बातें मुझे भाती हैं उनको मानते हैं, और मेरी वाचा को मानते हैं, उन को मैं अपना घर अपनी शहरपनाह के भीतर बेटे-बेटियों से भी अच्छा स्थान और नाम दूंगा। ।" पृष्ठ के नीचे अलेक्जेंडर के नीचे, अपने उद्धरण पृष्ठ 34 को

देखें। श्लोक तीन के बारे में बोलते हुए वे कहते हैं, "इस श्लोक का मूल अर्थ यह है कि सभी बाहरी अक्षमताओं को समाप्त कर दिया जाएगा , चाहे व्यक्तिगत हो या राष्ट्रीय। व्यक्तिगत अयोग्यताओं के पूरे वर्ग का प्रतिनिधित्व किन्नर के मामले से होता है। व्यवस्थाविवरण 23:1 के संदर्भ में, अभिव्यक्ति जितना व्यक्त करती है उससे अधिक विशिष्टताओं का सामान्य, या प्रतिनिधि है। तात्पर्य यह है कि सभी प्रतिबंध--यहां तक कि अभी भी प्रभावित धर्मांतरण करने वालों पर--समाप्त कर दिए जाने चाहिए।"

व्यवस्थाविवरण 23:1 में कहा गया है, "वह जो पत्थरों से घायल हो गया है या उसका गुप्त अंग काट दिया गया है, वह प्रभु की मंडली में प्रवेश नहीं करेगा।" एक सीमा है, लेकिन अब जो कहा जा रहा है वह यह है कि सभी बाहरी अक्षमताएं, व्यक्तिगत या राष्ट्रीय, समाप्त की जा रही हैं। सुसमाचार का निमंत्रण जाति, राष्ट्र या व्यक्तिगत अयोग्यताओं की परवाह किए बिना सभी के लिए खुला है। इसलिए धर्मांतरण करने वालों को प्रभावित करने वाले सभी प्रतिबंध समाप्त कर दिए गए हैं।

यशायाह 56:4-5 नपुंसकों और सब्त के दिन जब आप श्लोक 4 और 5 पर आते हैं तो यह कहता है, "क्योंकि प्रभु यों कहता है: 'मेरे विश्रामदिन को मानने वाले नपुंसकों के अधीन रहो, जो वस्तुएं मुझे प्रसन्न करती हैं उन्हें चुन लो, मेरी वाचा को थामे रहो और मैं उन को अपना घर अपनी शहरपनाह के भीतर बेटे-बेटियों से भी उत्तम स्थान और नाम दूंगा। मैं उन्हें ऐसा नाम दूंगा जो कभी मिटेगा नहीं।" अब मुझे ऐसा लगता है कि वहां की दीवारें, और वहां का घर, यरूशलेम या मंदिर का नहीं है। आप फिर से अधिक आदर्श अर्थ में बोल रहे हैं। वे भगवान के घर, या आवास की दीवारें हैं, जिसका उल्लेख अध्याय 54, छंद 11 और 12 में किया गया था। वहां की आकृति उस इमारत की है जहां नींव नीलमणि, एगेट की खिड़कियां, कार्बुनकल के द्वार, इत्यादि से रखी गई है। आगे. यह भगवान का घर है.

मुझे लगता है कि आपके पास प्रेरितों के काम अध्याय 8 में इसका एक दिलचस्प उदाहरण है क्योंकि वहां आपने फिलिप के इथियोपियाई खोजे से मुठभेड़ के बारे में पढ़ा और प्रेरितों के काम 8 के श्लोक 28 में हमने पढ़ा, "वह लौट रहा था और अपने रथ में बैठकर यशायाह भविष्यवक्ता,

फिर आत्मा को पढ़ रहा था।" फ़िलिप से कहा, 'पास जाओ और रथ पर बैठ जाओ। फिलिप्पुस उसके पास दौड़ा, और उसे भविष्यवक्ता यशायाह को पढ़ते हुए सुना, और कहा, 'आप जो पढ़ते हैं वह समझ में आता है?' उन्होंने कहा, 'मैं कैसे कर सकता हूं जब तक कि कोई आदमी मेरा मार्गदर्शन न करे?' और उस ने फिलिप्पुस से बिनती की, कि वह आकर मेरे संग बैठे, और जिस धर्मग्रन्थ में उस ने पढ़ा वह यह था, कि वह वध करने के लिये भेड़ की नाईं, वा भेड़ के बच्चे की नाईं जो कतराने के साम्हने ले जाया गया; फिर भी उसने अपना मुँह नहीं खोला । उसके अपमान में उसका निर्णय छीन लिया गया। और उसके वंश का वर्णन कौन करेगा, क्योंकि उसका प्राण पृथ्वी पर से उठा लिया गया है।" वह यशायाह 53 से पढ़ रहा था। तब खोजे ने फिलिप्पुस को उत्तर दिया, और कहा, मैं तुझ से बिनती करता हूं, कि भविष्यद्वक्ता यह किसके विषय में कहता है? अपने या किसी और आदमी का?' तब फिलिप्पुस ने अपना मुंह खोला और उसी धर्मग्रन्थ से आरम्भ किया, और उसे उपदेश दिया, 'यीशु।' और वे चलते चलते एक जल के पास पहुंचे, और खोजे ने कहा, देख, यहां जल है; मुझे बपतिस्मा लेने में क्या बाधा है?' और फिलिप्पुस ने कहा, 'यदि तू अपने सम्पूर्ण मन से विश्वास करेगा, तो कर सकेगा।' उसने उत्तर दिया और कहा, 'मुझे विश्वास है कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है।' और फिलिप्पुस और खोजा दोनों जल में उतर गए, और उस ने उसे बपतिस्मा दिया। यहां आपके पास एक हिजड़े का उदाहरण है जो एक धर्मान्तरित व्यक्ति के रूप में इस्राएल की मंडली से बाहर कर दिया गया होता, लेकिन यहां उसका भगवान के परिवार, या घर में स्वागत किया जाता है।

यशायाह 56:6-7 होमबलि स्वीकृत छंद 6 और 7: "परदेशी के पुत्र भी जो प्रभु की सेवा करने, और प्रभु के नाम से प्रेम करने, और उसके सेवक बनने के लिए उसके साथ जुड़ जाता है।" यहाँ वह वाक्यांश फिर से है; बहुवचन। “जो सब्त के दिन को अपवित्र करने से बचाता है, और मेरी वाचा को मानता है, उन को मैं अपने पवित्र पर्वत पर ले आऊंगा, और अपने प्रार्थना के भवन में आनन्दित करूंगा। उनके होमबलि, उनके बलिदान मेरी वेदी पर स्वीकार किए जाएंगे, क्योंकि मेरा घर सभी लोगों के लिए प्रार्थना का घर कहलाएगा। प्रभु परमेश्वर, जो इस्राएल के निकाले हुए लोगों को इकट्ठा करता है, कहता है, 'हां, मैं उन लोगों के अलावा औरों को भी अपने पास इकट्ठा करूंगा जो उसके

पास इकट्ठे हुए हैं।'"

अब, छंद छह और सात में आपके पास अभिव्यक्ति का एक रूप उपयोग किया गया है जो पुराने नियम की अर्थव्यवस्था के समारोह से लिया गया है। "होमबलि, उनके बलिदान मेरी वेदी पर स्वीकार किए जाएंगे।" इसलिए उस आराधना का वर्णन लेखक और उसके मूल श्रोताओं के परिचित शब्दों में किया गया है। मुझे ऐसा लगता है कि यहां देखने वाली बात यह है कि भगवान की सच्ची पूजा उन विशिष्ट रूपों तक ही सीमित नहीं है। मुझे लगता है कि यह काफी हद तक मलाकी 1:11 जैसा है। मलाकी 1:11 में आप पढ़ते हैं, "क्योंकि सूर्योदय से लेकर अस्ताचल तक मेरा नाम जाति जाति में महान होगा, और हर स्थान में मेरे नाम पर धूप चढ़ाई जाएगी। और राष्ट्रों के बीच मेरे नाम के लिये शुद्ध भेंट महान होगी , सेनाओं के यहोवा का यही वचन है। अब जब यह विशेष रूप से धूप और शुद्ध भेंट की बात करता है, तो यह पुराने नियम की अर्थव्यवस्था के संदर्भ में है। मुझे लगता है कि यह जो बात कर रहा है वह पुरानी अर्थव्यवस्था के संदर्भ में है लेकिन यह भगवान की सच्ची पूजा के बारे में बात कर रहा है। यह सूर्य के उगने से लेकर अस्त होने तक चलता रहेगा। यह विश्व स्तर पर है जहां लोग चर्च से जुड़ते हैं और प्रभु का अनुसरण करते हैं और आत्मा और सच्चाई से उनकी पूजा करना चाहते हैं।

यशायाह 56:8 अत: श्लोक 8 उसका अनुसरण करता है और इस परिच्छेद पर हमारी चर्चा को समाप्त करता है। “प्रभु परमेश्वर, जो इस्राएल के निकाले हुए लोगों को इकट्ठा करता है, कहता है, 'तौभी मैं उन लोगों के अलावा औरों को भी उसके पास इकट्ठा करूंगा जो उसके पास इकट्ठे हुए हैं।' जो उसके अधीन इकट्ठे हुए हैं।” मुझे ऐसा लगता है कि अंतिम वाक्यांश में अन्यजातियों की बुलाहट की बात की जा रही है।

यशायाह 54-56 का सारांश नौकर के काम के परिणाम इसलिए अध्याय 54 से 56 नौकर के काम के परिणाम हैं। आप देखें कि कैसे सेवक का कार्य राष्ट्रीय या भौतिक अर्थ में बिना किसी सीमा या प्रतिबंध के मुक्ति की इस मुफ्त पेशकश को प्रदान करता है और यह पेशकश पृथ्वी के छोर तक जाएगी।

विद्यार्थी प्रश्न: श्लोक 8 में प्रभु किस बारे में बात कर रहे हैं जब वह कहते हैं कि वह अपने उपासकों को इकट्ठा करते हैं? क्या वह राष्ट्रीय इज़राइल या चर्च के बारे में बात कर रहे हैं?

वन्नॉय का उत्तर: मैं इस संदर्भ में उत्तरार्द्ध के बारे में सोचने के लिए अधिक इच्छुक हूं क्योंकि यह सुसमाचार संदेश के संदर्भ में है। पुराने नियम के काल में शरीर के अनुसार इसराइल था, और फिर एक सच्चा इज़राइल था - ईश्वर की सच्ची प्रजा। और फिर आपके पास घरेलू जैतून के पेड़ की शाखाओं को काटने और जंगली शाखाओं में ग्राफ्टिंग करने के लिए इज़राइल से पॉल के रोमनों के चित्र का उपयोग करने वाला आंदोलन है। लेकिन आख़िरकार इसराइल को वापस ख़रीद लिया जाएगा और पूरे इसराइल को बचा लिया जाएगा। मुझे लगता है कि यह भूमि पर लौटने के अर्थ में एक सभा नहीं है, बल्कि प्रभु के पास आने, मसीह के ज्ञान और मुक्ति में सेवक और मसीहा के कार्य को स्वीकार करने के लिए है।

मैं किंग जेम्स से पढ़ रहा था। अब मैं एनआईवी को देख रहा हूं - यह आपको एनआईवी में काफी अलग प्रभाव देता है - जो कि आप जो सुझाव दे रहे हैं उसके अनुरूप है, और इसे लेने का एक बेहतर तरीका हो सकता है। इसलिए ज़ोर प्रभु परमेश्वर पर है जो पहले से इकट्ठे हुए लोगों के अलावा अन्य लोगों को भी इकट्ठा करेगा। आप कह सकते हैं, वह इस्राएल को बन्धुवाई से भी लौटाएगा। परन्तु जोर उन लोगों के अलावा दूसरों [अन्यजातियों] को उनके पास इकट्ठा करने पर है जो पहले से ही इकट्ठे हैं [इज़राइल]।

ठीक है, चलो यहीं रुकें। जहां तक हमारे व्याख्यान का संबंध है, मैं क्या करने जा रहा हूं, आप ध्यान दें कि यह यशायाह की हमारी चर्चा का अंत है। आगे हम डेनियल की ओर बढ़ेंगे। मैंने सोचा था कि मैं आज सुबह डेनियल से मिलूंगा लेकिन पांच मिनट शेष रहते हुए मैं इसे यहां शुरू करने में झिझक रहा हूं। तो चलिए यहीं रुकते हैं और अगले सप्ताह डेनियल के साथ अपनी चर्चा शुरू करेंगे।

ब्रांडी हॉल द्वारा प्रतिलेखित
कार्ली गीमन द्वारा रफ संपादित
टेड हिल्डेब्रांट द्वारा संपादित

डॉ. पेरी फिलिप्स द्वारा अंतिम संपादन
डॉ. पेरी फिलिप्स द्वारा पुनर्वाचित